हिंदी और कन्नड़ उपन्यासों में मुस्लिम समाज़ का बदलता स्वरूप

(चयनित उपन्यासों के संदर्भ में)

HINDI AUR KANNADA UPANYASON MEIN MUSLIM SAMAJ KA BDALATA SWAROOP
(CHAYANIT UPANYASON KE SANDARBH MEIN)

पी.एच.डी.हिन्दी शोध सार

Ph.D Hindi Synopsis

2019-20

शोधार्थी

मेहराज़बेगम. सैय्यद

Reg No:KSAWUV/Ph.D/443/2018-19

निर्देशिका

प्रो. श्रीमती राजु एस. बागलकोट

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय

विज़यपुर – 586 108

हिंदी विभाग

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय

विज़यपुर – 586 108

अनुक्रमणिका

पहला अध्याय : तुलनात्मक साहित्य की सैद्धांतिकी

1.1 तुलनात्मक साहित्य का अर्थ

1.2 तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा

1.3 तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप

1.4 तुलनात्मक साहित्य का विकास

1.5 वर्तमान युग में तुलनात्मक साहित्य की आवश्यकता

1.6 तुलनात्मक साहित्य अध्ययन की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

दूसरा अध्याय : भारत में मुस्लिम समाज का बदलता स्वरूप

2.1 इस्लाम पूर्व भारत में सामाजिक संरचना

2.2 भारत में इस्लाम का आगमन : सांस्कृतिक प्रभाव

2.3 मध्यकालीन भारत और मुस्लिम

2.4 मुस्लिमों की सामाजिक विश्वदृष्टि

2.5 भारतीय संविधान और अल्पसंख्याक

2.6 सच्चर समिति की सिफारिशें

तीसरा अध्याय: हिंदी एवं कन्नड़ उपन्यासों में मुस्लिम समाज के चित्रण की परंपरा

3.1 स्वतंत्रता पूर्व हिंदी उपन्यास

3.2 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास

3.3 स्वतंत्रता पूर्व कन्नड़ उपन्यास

3.4 स्वातंत्र्योत्तर कन्नड़ उपन्यास

चौथा अध्याय : हिंदी उपन्यासों में मुस्लिम समाज का बदलता

4.1 मुस्लिम समाज के यथार्थ की अभिव्यक्ति: कालाजल

4.1.1 ‘कला जल’ उपन्यास के पात्र

4.1.1.1 बिट्टी बी दारोगिन

4.1.1.2 छोटी फूफी

4.1.1.3 मिर्जा करामत बेग

4.1.1.4 रज़्ज़ू मियाँ

4.1.1.5 मोहसिन

4.1.1.6 बब्बन

4.1.1.7 मालती

4.1.1.8 सालिया

4.1.1.9 रोशन बेग

4.2. इतिहास से गुज़रती हुई विभाजन गाथा: आधागाँव

4.2.1 ‘आधा गाँव’ उपन्यास के पात्र

4.2.1.1 झंझरिया बी

4.2.1.2 अकबरी बीबी

4.2.1.3 हुस्सन दादी

4.2.1.4 सईदा

4.2.1.5 गोरे दा

4.2.1.6 मौलवी बेदार हुसैन

4.2.1.7 फुन्नन दा

4.2.1.8 अतहर मियाँ

4.2.1.9 रफी फूफा:

4.2.1.10 गुज्जन मियाँ

4.2.1.11 कम्मों

4.2.1.12 सलमा

4.2.1.13 सुलैमान चाचा

4.3 बुनकारों की जीवन दास्तान: झीनी झीनी बीनी चदरिया

4.3.1 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' उपन्यास के पात्र

4.3.1.1 अलीमुन

4.3.1.2 रहनवा

4.3.1.3 आमीन

4.3.1.4 मतीन

4.3.1.5 इकबाल

4.4. हिंदू - मुस्लिम बँटवारे की दास्तान: जिंदा मुहावरे

4.4.1 'जिंदा मुहावारे' उपन्यास के पात्र

4.4.1.1 निजाम

4.4.1.2 रहिमउद्दीन

4.4.1.3 इमाम

4.4.1.4 फात्मा बी

4.4.1.5 रज्जो

4.4.1.6 शमीमा

4.5 निम्न मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की गाथा: कोरज़ा

4.5.1 'कोराज' उपन्यास के पात्र

4.5.1.1 नसीमा

4.5.1.2 अरमान बी

4.5.1.3 साजो खाला

4.5.1.4 राबिया

4.5.1.5 रहमान खाँ

4.5.1.6 अमित

4.5.1.7 कम्मो

4.5.1.8 मोना

4.5.1.9 जुम्मन खाँ

4.6. इतिहास की वर्तमान यातना का दस्तावेज: सात आसमान

4.6.1. 'सात आसमान' उपन्यास के पात्र

4.6.1.1 अब्बा मियाँ

4.6.1.2 अब्बा

4.6.1.3 बकरिदी

4.6.1.4 अजमीन बुआ

4.6.1.5 मुन्नी बाजी

4.6.1.6 अंधा जाफर

4.6.1.7 अब्बू साब

4.6.1.8 मुस्तफा

पाँचवा अध्याय : हिंदी उपन्यासों में मुस्लिम समाज का बदलता स्वरूप

5.1. निम्न मध्यवर्गीय मुस्लिम स्त्री की दास्तान -'चंद्रगिरी तिरदल्ली'

5.1.1 'चंद्रगिरी तिरदल्ली' उपन्यास के पात्र

5.1.1.1 महम्मद खान

5.1.1.2 रशीद

5.1.1.4 नादिर

5.1.1.5 फातिमा

5.1.1.6 अमीनम्मा

5.2. मुस्लिम समाज में बदलते हुए रीति-रिवाज़ों की दास्तान : जिहाद

5.2.1 'जिहाद' उपन्यास के पात्र

5.2.1.1 सल्मा

5.2.1.2 सलीन टीचर

5.2.1.3 अमीना

5.2.1.4 रशीद

5.2.1.5 करीम खाँन

5.2.1.6 रूसी

5.2.1.7 रहीम साहुकर

5.3. निम्न मुस्लिम परिवार की जीवन गाथा - सरकुगळू (माल)

5.3.1 सरकुगळू (माल) उपन्यास के पात्र

5.3.1.1 हाजीमा

5.3.1.2 नफिसा

5.3.1.3 सलीम

5.3.1.4 मुम्मटी

5.3.1.5 अच्च कोया

5.3.1.6 जूबेदा

5.4.समकालीन शिक्षित मुस्लिम नारी की दुखद गाथा -'बंदळिके'

5.4.1 'बंदलिके' उपन्यास के पात्र

5.4.1.1 शाहीन

5.4.1.2 अफरा

5.4.1.3 साबीर

5.4.1.4 आफताब

5.4.1.5 मसरूर

5.5 मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज की त्रासद कथा - 'जन्नत् मोहल्ला'

5.5.1 'जन्नत मोहल्ला' उपन्यास के पात्र

5.5.1.1 सैरा

5.5.1.2 ताहीरा

5.5.1.3 नुरजान

5.5.1.4 रहमान

5.5.1.5 शयिरि शब्बीर

5.5.1.6 मोदीन

5.5.1.7 मस्तान

5.5.1.8 जिलानी

5.6. बदलते हुए समय की सांप्रदायिकता का आख्यान- कांडकल मने

5.6.1 'कांडकल मने' उपन्यास के पात्र

5.6.1.1 ताहीरा

5.6.1.2 फातिमा

5.6.1.3 ऐसु

5.6.1.4 जोहरा

5.6.1.5 अब्बु ब्यारी

5.6.1.6 त्यापण्णा शेट्टी

5.6.1.7 नासर

5.6.1.8 मैमुन

छठवाँ अध्याय : हिंदी और कन्नड़ मुस्लिम उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन

6.1 हिंदी और कन्नड़ मुस्लिम उपन्यासों का वर्ण्य वस्तु एवं विषय

6.1.1 सामाजिक

6.1.1.1 स्त्री शोषण

6.1.1.2 स्त्री की सामाजिक परिस्थिति

6.1.2 सांस्कृतिक

6.1.2.1 रमजान ईद

6.1.2.2 मुहर्रम ईद

6.1.2.3 फातिहा देना

6.1.2.4 पर्दा प्रथा

6.1.2.5 शादी की रस्में

6.1.2.4.1 हल्दी की रस्म

6.1.2.4.2 दहेज

6.1.2.5.3 विदाई की रस्म

6.1.2.5.4 मैयत पर होनेवाले रीति-रिवाज

6.1.3 धार्मिक :

6.1.3.1 हिन्दू-मुस्लिम एकता

6.1.3.2 मुस्लिमों की जाति व्यवस्था

6.1.3.3 तलाक

6.1.3.4 धार्मिक नियमों को विरोध

6.1.3.5 स्त्रियों की दुर्दशा

6.1.4 आर्थिक

6.1.4.1 बुनकरों की आर्थिक संकट

6.1.4.2 आर्थिक विषमता

6.1.4.3 आर्थिक आधार का महत्व

6.1.5 शैक्षणिक

6.1.5.1 स्त्रियों की शिक्षा

6.1.5.2 शिक्षा एवं सरकारी नौकरियों

6.1.5.3 शिक्षा का महत्व

6.1.6 राजनीतिक :

6.1.6.1 छात्र राजनीति के यथार्थ

6.1.6.2 भ्रष्टाचार व्यवस्था

6.1.6.3 बँटवारें में राजनीति

6.1.6.4 पार्टियों या पक्षों की राजनीति

6.2 हिन्दी और कन्नड़ मुस्लिम उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन

6.2.1 गुलशेर खाँन शानी का 'काला जल' और फकीर महमद कट्पाड़ी का 'सरकुगळु' (माल)

6.2.1.1 स्त्री शोषण :

6.2.1.2 फातिहा

6.2.1.3 राजनीतिक विद्रूपताएँ

6.2.2 मेहरून्निसा परवेज का 'कोरजा' और सारा अबूबकर का 'चंद्रगिरी तिरदल्ली'

6.2.2.1 शोषित वर्ग

6.2.2.2 शादी की रस्में

6.2.2.3 अनमेल विवाह

6.2.2.4 तलाक

6.2.3 राही मासूम रजा का 'आधा गाँव' और अब्बास मेलीनमाने का 'जन्नत मोहल्ला'

6.2.3.1 आँचलिक उपन्यास

6.2.3.2 मुर्हरम ईद

6.2.3.3 आर्थिक शोषण

6.2.3.4 स्त्री शोषण

6.2.3.5 धर्मांधता का आचरण

6.2.4 अब्दुल बिस्मिल्लाह का ' झीनी झीनी बीनी चदरिया ' और बोलवारु महमद कुई का 'जिहाद'

6.2.4.1 बुनकर

6.2.4.2 हिन्दू-मुस्लिम के सम्प्रदायिक दंगे

6.2.4.3 भ्रष्टाचार व्यवस्था

6.2.4.4 शिक्षा की अहमियत

6.2.4.5 पर्दाप्रथा

6.2.4.6 आर्थिक स्तिथि

6.2.4.7 तलाक

6.2.5 नासिरा शर्मा का 'जिंदा मुहावरे' और मुमताज बेगम का 'बंदलिके'

6.2.5.1 हिन्दू-मुस्लिम एकता

6.2.5.2 आर्थिक स्थिति

6.2.5.3 बँटवारें में राजनीति

6.2.5.4 तलाक

6.2.6 असगर वजाहत का 'सात आसमान' और महमद कुलाई का 'कड़कल्ल माने'

6.2.6.1 पार्टियों या पक्षों की राजनीति

6.2.6.2 शिक्षा एवं सरकारी नौकरियों

सातवाँ अध्याय: हिन्दी और कन्नड़ मुस्लिम उपन्यासकारों के उपन्यासों की भाषा शैली

7.1 भाषा तथा शैली

7.1.1 गुलशेर ख़ान शानी के 'काला जल' उपन्यास की भाषा

7.1.1.1 अंग्रेजी शब्द

7.1.1.2 उर्दू शब्द

7.1.1.3 देसी शब्द

7.1.1.4 द्विरूक्ति शब्द

7.1.1.5 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

7.1.2 अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' उपन्यास की भाषा

7.1.2.1 सरल सहज सुबोध भाषा

7.1.2.2 अंग्रेजी शब्द

7.1.2.3 उर्दू शब्द

7.1.2.4 देशज शब्द

7.1.2.5 स्थानीय शब्द या लोक शब्द

7.1.2.6 उर्दू मिश्रित भोजपुरी शब्द

7.1.2.7 मुहावरे, कहावतें और लोकोक्तियाँ

7.1.3 राही मासूम रजा के'आधा गाँव' उपन्यास की भाषा

7.1.3.1 लोक बोलियाँ या लोक शब्द

7.1.3.2 तत्सम शब्द

7.1.3.3 तद्भव शब्द

7.1.3.4 देशज शब्द

7.1.4 नासिरा शर्मा के 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास की भाषा

7.1.4.1 लोक शब्द

7.1.4.2 अंग्रेजी शब्द

7.1.4.3 अरबी शब्द

7.1.4.4 फारसी शब्द

7.1.4.5 उर्दू शब्द

7.1.4.6 मुहावरे

7.1.4.7 लोकोक्तियाँ व कहावतें

7.1.5 मेहरुन्निसा परवेज के 'कोरजा' उपन्यास की भाषा

7.1.5.1 संस्कृत शब्द

7.1.5.2 अंग्रेजी शब्द

7.1.5.3 आँचलिक शब्द

7.1.5.4 संयुक्त शब्द

7.1.5.5 समान संयुक्त शब्द

7.1.5.6 रिश्ते-नातों से संबंधित शब्द

7.1.5.7 कहावतें (लोकोक्तियाँ)

7.1.5.8 सूक्तियाँ

7.1.5.9 गालियों का संदर्भ

7.1.6 असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास की भाषा

7.1.6.1 उर्दू भाषा

7.1.6.2 प्रादेशिक शब्द (अवधी शब्द)

7.1.6.3 गाली-गलौच की शब्द

7.1.6.4 पंजाबी शब्द

7.1.6.5 अंग्रेजी शब्द

7.1.6.6 उर्दू-अरबी भाषा

7.1.6.7 मुहावरे

7.1.6.8 लोकोक्तियाँ

7.1.7 सारा अबूबकर के 'चंद्रगिरि तिरदल्ली' (चंद्रगिरि के किनारे) उपन्यास की भाषा

7.1.7.1 अंग्रेजी शब्द

7.1.7.2 उर्दू, अरबी-फारसी शब्द

7.1.7.3 आँचलिक शब्द (तुलु शब्द)

7.1.8 बोलवारु मुहमद कुंई के ‘जिहाद’ उपन्यास की भाषा

7.1.8.1 अंग्रेजी शब्द

7.1.8.2 उर्दू, अरबी-फारसी शब्द

7.1.9 फकीर अहमद कट्टपाड़ी के ‘सरकुगळु’ (माल) उपन्यास की भाषा

7.1.9.1 अंग्रेजी शब्द

7.1.9.2 उर्दू, अरबी-फारसी शब्द

7.1.9.3 आँचलिक शब्द (ब्यारी शब्द)

7.1.10 मुमताज बेगम के ‘बंदलिके’ उपन्यास की भाषा

7.1.10.1 अंग्रेजी शब्द

7.1.10.2 उर्दू, अरबी-फारसी

7.1.11 अब्बास मेलीनमनि के ‘जन्नत मोहल्ला’ उपन्यास की भाषा

7.1.11.1 अंग्रेजी शब्द

7.1.11.2 उर्दू, अरबी-फारसी शब्द

7.1.11.3 आंचलिक शब्द (बीजापुर-बागलकोट क्षेत्र की शब्द)

7.1.11.4 मुहावरे

7.1.11.5 गालियाँ

7.1.12 मुहमद कुलाई के ‘काडंकल्ल मने’ उपन्यास की भाषा

7.1.12.1 अंग्रेजी शब्द

7.1.12.2 उर्दू, अरबी-फारसी शब्द

7.1.12.3 आंचलिक शब्द (ब्यारी शब्द)

7.2 हिन्दी और कन्नड़ मुस्लिम उपन्यासकारों के उपन्यासों में विविध शैलियों का प्रयोग

7.2.1 पूर्वदीप्ति या फ्लैशबैक शैली

7.2.2 वर्णनात्मक शैली

7.2.3 आत्मकथात्मक शैली

7.2.4 विश्लेषणात्मक शैली

7.2.5 आंचलिक शैली

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

अनुसूची एक : आधार ग्रंथ

अनुसूची दो : सहायक ग्रंथ

अनुसूची तीन : शोधार्थी द्वारा किए गए अकादमिक कार्य

शोध- सार

दुनिया में जितने समाज हैं उन सभी की अपनी एक विशिष्टता होती है। हम यह जानते हैं देश की भी यही स्थिति है। इसलिए यहाँ के संविधान में 'धर्मनिरपेक्ष' जैसे शब्द का प्रयोग कि समाज, संप्रदाय या धर्म के आधार पर सम्पूर्ण विश्व में प्रमुखतः हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई ही पाए जाते हैं और ये समाज लगभग हर देशों में कुछ-कुछ अनुपात में हैं। साथ ही इस अनुपात को एक सूत्रीय निकाय में बांधने के लिए दुनिया भर की सरकारों ने एक व्यवस्थित शासन निकाय बनाया है। भारत जैसे किया गया है। ' धर्मनिरपेक्षता' का अर्थ है कि राज्य राजनीति या किसी गैर-धार्मिक मामले से धर्म को दूर रखे तथा सरकार धर्म के आधार पर किसी से भी कोई भेदभाव न करें। अर्थात किसी के धर्म का विरोध नहीं करता है बल्कि सभी को

अपने धार्मिक विश्वासों एवं मान्यताओं को पूरी आज़ादी से मानने की छूट देता है। बावजूद इसके कालांतर में देश के अन्दर कई बार हिन्दू-मुस्लिम के नाम पर धार्मिक कट्टरता एवं साम्प्रदायिकता जैसी घटनाएँ घटित होती रही हैं।

भारतीय समाज विभिन्न संस्कृतियों, परम्परों एवं रीति-रिवाजों का देश है। विविधता के बावजूद एकरूपता या अखंडता में एकता इसकी सबसे बड़ी विशेषता रही है। भारतीय परिवेश में मुस्लिम समाज का प्रवेश लगभग एक हजार वर्ष पुराना है और यह प्रवेश दो जातियों, सम्प्रदायों, तहजीबों, मजहबों, सभ्यताओं, एवं संस्कृतियों के मिलन एवं मिश्रण का दौर है। जिसके कारण अवधारणात्मक स्तर पर यह देश कभी भारतीय कभी हिंद तो कभी हिंदुस्तान के नाम से भी जाना गया है। दुनिया के किसी भी देश में इस तरह का मिलन हमें नहीं दिखाई देता। न केवल संस्कृतियों, परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों के आधार पर बल्कि भाषा, साहित्य, कला आदि के स्तर पर भी यह मेल अनोखा था। लेकिन भारत को आजादी मिलने तक एवं आजादी के बाद का दौर तक आते-आते इस अनोखे मिलन की पूरी की पूरी तस्वीर ही बदल दी गई। यह तस्वीर केवल बदली ही नहीं गई बल्कि इसे कुरूप भी बनाया गया। जिस भारत की मिट्टी में नया हिंदुस्तान जन्म ले चुका था उसकी जड़े विदेशी बतलायी गई और ऐसा कहा जाता है कि यह सारा खेल मात्र भारत में अंग्रेजों के आने से ही नहीं शुरू हुआ बल्कि इसमें कुछ हमारी भी कमियाँ थी। पद, पैसा, प्रतिष्ठा पाने के लालच में कुछ तथाकथित रसूख, अमीर एवं स्वार्थी नेताओं एवं समाजसेवियों ने अपनी जातीय अस्मिता को श्रेष्ठ दिखाने के चक्कर में अंग्रेजों के पिछलग्गू बने एवं ख़ुशामद करने लगे, लिहाजा उनके हौसले बुलंद होते गए। परिणामतः दोनों संस्कृतियों में आपसी-फूट पड़नी शुरू हो गई। जबकि इतिहास में हम सारा दोष अंग्रेजों के सिर मढ़ कर छुट्टी ले लेना चाहते हैं। आजादी मिलने एवं आजादी के बाद के दौर तक इस देश ने अनेक सांप्रदायिक दंगे, देश का बंटवारा, भारत-पाक युद्ध आदि देखा है। जिसकी शिनाख्त

तत्कालीन पत्रकारिता ही नहीं बल्कि गहरे स्तर पर रचे जाने वाले भारतीय साहित्य में भी दिखाई देती है। कथा साहित्य के स्तर पर न केवल हिंदी में बल्कि भारत की अन्य भाषाओँ में भी बहुत कुछ लिखा गया। सांप्रदायिक दंगे, बंटवारे का दर्द, मुस्लिम समाज की संवेदना, पीड़ा एवं उनके संघर्ष को लेकर हिंदी व हिंदीतर साहित्य में अनेक उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी गई। 'नई कहानी' आन्दोलन के साथ उदारीकरण और अस्मितामूलक विमर्शों की वैचारिकी ने उपेक्षित एवं मुख्य धारा से वंचित, हाशिये पर ढकेल दी गई अस्मिताओं को वैचारिक बल प्रदान किया। जिससे साहित्य एवं मानविकी के क्षेत्र में एक युगांतकारी परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया। आज जिस प्रकार भारतीय मीडिया एवं पत्रकारिता की भाषा ने एक खास चश्मे से दंगाई, अल्पसंख्यक, उपद्रवी, आतंकी, कौमी आदि शब्दावलियों से सम्पूर्ण मुस्लिम समाज को दिखलाने का प्रयास किया है, वह खतरनाक है। आनेवाले वक्त में यह स्थिति और भी भयंकर हो सकती है। इसलिए इस समस्या को केवल ऐतिहासिक या कम्यूनल अथवा नेशनल स्तर पर नहीं देखना चाहिए बल्कि इसे सम्पूर्ण मानवीयता एवं सर्व धर्म संभाव्य के धरातल पर देखा जाना चाहिए।

ऐसे विषय पर काम करने के लिए एक सफल निर्देशक की जरूरत थी। जैसे ही एम.ए. पूरा होने के बाद प्रो. श्रीमती राजु एस्. बागलकोट मैडम जी से विचार विमर्श की तो उन्होंने तुलनात्मक साहित्य खास कर हिंदी और कन्नड उपन्यासों पर करने के लिए कहा तो थोडा बहुत डर लगा फिर जैसे-जैसे अध्ययन करने लगी तब एक प्रकार का भरो सा मन में उभर कर सामने आया।

मेरे शोध निर्देशिका प्रो. श्रीमती राजु एस्. बागलकोट मैडम जी के साथ विचार विमर्श करने के बाद मेरा विषय तैय हुआ - "हिंदी और कन्नड़ उपन्यासों में मुस्लिम समाज का बदलता स्वरूप" (चयनित उपन्यासों के संदर्भ में)। इस शोध प्रबंध में भारतीय साहित्य के अंतर्गत प्रमुख रूप से हिंदी एवं कन्नड़ के कुछ चुनिन्दा उपन्यासों में मुस्लिम समाज की इन्ही

स्थितियों,संवेदनाओं एवं संघर्षों को तुलनात्मक शोध प्रविधि के आधार पर समझने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध को अध्ययन की स विधा के हेतु प्रस्तावना और उपसंहार के अतिरिक्त सात अध्याय में विभाजित किया गया है। वह इस प्रकार है -

'पहला अध्याय : तुलनात्मक साहित्य की सैद्धांतिकी ' के अंतर्गत तुलना के माध्यम से अनेक भाषाओं में लिखे साहित्य को जानना, समझना तथा उसका समन्वय पर लिखा गया है।

'दूसरा अध्याय : भारत में मुस्लिम समाज का बदलता स्वरूप' के अंतर्गत इस्लाम धर्म की बारीकियों को स्पष्ट करते हुए भारतीय समाज में मुस्लिम समुदाय की स्थिति का अवलोकन किया गया है।

'तीसरा अध्याय : हिंदी एवं कन्नड़ उपन्यासों में मुस्लिम समाज के चित्रण की परम्परा' के अंतर्गत स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर काल में रचित हिंदी एवं कन्नड़ के उपन्यासों में मुस्लिम समाज के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है।

'चौथा अध्याय : हिंदी उपन्यासों में मुस्लिम समाज का बदलता स्वरूप' के अंतर्गत कुछ चुनिन्दा उपन्यासकारों एवं उनके एक उपन्यास को केंद्र में रखकर मुस्लिम समाज के बदलते स्वरूप की पहचान करने का प्रयास किया गया है।

'पाँचवाॅ अध्याय : कन्नड़ उपन्यासों में मुस्लिम समाज का बदलता स्वरूप' के अंतर्गत मुस्लिम समाज पर आधारित कन्नड़ में लिखे उपन्यासों का विवेचन-विश्लेषण किया गया है। हिंदी उपन्यासों के अनुरूप यहाँ भी कन्नड़ समाज में जीवन जी रहे मुस्लिम समाज के बीच आपसी संबंधों, राग-द्वेष, संवेदना, पीड़ा एवं संघर्ष के द्वारा बदलते स्वरूप की शिनाख्त की गई है।

'छठवाँ अध्याय : हिंदी और कन्नड़ मुस्लिम उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन ' के अंतर्गत हिंदी तथा कन्नड़ में रचित इन चयनित उपन्यासों में मुस्लिम जीवन एवं उनके समाज का तुलनात्मक दृष्टि से सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक बिन्दुओं

से साम्यता एवं विषमता का अध्ययन करते हुए साहित्यिक मूल्यों के साथ-साथ मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

सातवाँ अध्याय : हिन्दी एवं कन्नड़ मुस्लिम उपन्यासों में भाषा शैली के अंतर्गत भाषा शैली, अंग्रेजी शब्द, उर्दू शब्द, देशी शब्द, द्विरुक्ति शब्द और मुहावरे एवं लोकोक्तियों को दर्शाया है। अंत में उपसंहार के रूप में दोनों भाषाओं में रचित उपन्यासों में मुस्लिम समाज की संवेदना को, तुलनात्मक दृष्टि से, उनके बीच साम्य-वैषम्य को दिखाने का प्रयास किया गया है।

शोध की प्रमाणिकता–मुस्लिम समाज को लेकर हिंदी साहित्य या कन्नड़ साहित्य में अलग-अलग स्तर पर भारत के अनेक विश्वविद्यालय में कार्य हुए हैं । लेकिन दोनों भाषाओँ में रचित कथा साहित्य को एक साथ लेकर अभी तक कार्य नहीं हुआ है । यह विषय अपने आप में नवीन है। अतः प्रस्तुत शोध शीर्षक से संबंधित अभी तक मेरी जानकारी में भारत के किसी शिक्षण संस्थान या विश्वविद्यालय में कोई काम नहीं हुआ है।

शोध प्रविधि: प्रस्तुत शोध प्रबंध - " हिंदी और कन्नड़ उपन्यासों में मुस्लिम समाज़ का बदलता स्वरूप" (चयनित उपन्यासों के संदर्भ में)में शोध की तुलनात्मक पद्धति का सहारा लेते हुए हिंदी एवं कन्नड़ साहित्य में रचित उपन्यासों का तुलनात्मक पद्धति से आलोचनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास किया है ।मुस्लिम, समाज और संस्कृति के लिए मूल आधार रही है। इनके समक्ष अनेक सामाजिक, सास्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक ऐर संवैधानिक समस्याएँ मौजूद है।

शोध प्रबंध का उद्देश्य :प्रस्तुत शोध–प्रबंध का प्रमुख उद्देश्य हिंदी और कन्नड़ उपन्यासों में चित्रित मुस्लिम समाज में हुए बदलाओं पर अध्ययन करना है । इस शोध–प्रबंध में हिंदी और कन्नड़ साहित्य मों मुस्लिम समाज में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक और संविधानात्मक पहलुओं को इनके उपन्यासों के माध्यम से विश्लेषित करने का प्रयास किया

जाएगा। उस समाज में हुए परिवर्तन को देखने का प्रयास किया जाएगा। उनके खेत - खलियान, रहने के लिए घर, रोजगार, स्त्रियों के लिए संरक्षण, जात पंचायत के वर्चस्व को देखने का प्रयास किया जाएगा। इनके बच्चों की शिक्षा और पहचान की समस्या आदि को रेखांकित किया जाएगा। आधुनिकीकरण एवं भूमंडलीकरण के कारण इनके जीवन में आए विविध परिवर्तनों और भाषाओं आदि को प्रस्तुत शोध-प्रबंध के माध्यम से किया जाएगा। अंत में मुस्लिम समाज को आधुनिक और उत्तर आधुनिक विचारों को देखते हुए सुधार के लिए समुचित-उपाय भी सुझाए जाएंगे।

शोध कार्य की उपलब्धियाँ :

1. हिंदी और कन्नड़ उपन्यासों के माध्यम से मुस्लिम समाज के रीति रिवाजो को संक्षेप में प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से देखा गया।
2. स्वातंत्र्य पूर्व, स्वातंत्र्य काल एवं स्वातंत्रोत्तर युगीन हिंदी उपन्यास साहित्य के माध्यम से मुस्लिम समाज के संबंध में भारत सरकार द्वारा समय-समय पर लिए कानुन और सच्चार समिति रिपोर्ट आदि का सहारा लिया गया है।
3. प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक मुस्लिम समाज में हुए बदलाओं को देखा गया है।
4. मुस्लिम समाज भितरी और बाहरी अन्याय, अत्याचारों आदि के संबंध में शोषण के बदलाओं को देखा गया है।
5. मुस्लिम समाज के स्त्रियों की पारिवारिक, शोषित, परित्यक्ता, विधवा, आदि स्थितियों के बारे में उपन्यासों के माध्यम से देखा गया है।

संभावनाएँ :

1. हिंदी और कन्नड़ उपन्यासों में मुस्लिम समाज पर आधारित उपन्यासों का अध्ययन।

2. हिंदी और कन्नड़ उपन्यासों में मुस्लिम समाज पर आधारित उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन।

3. हिंदी और कन्नड़ उपन्यासों में मुस्लिम समाज पर आधारित उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन।

4. भारतीय परिपेक्ष्य में मुस्लिम समाज का जीवन और साहित्य पर अध्ययन।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ :

क्र.सं.	लेखक का नाम	रचना का नाम	प्रकाशक	वर्ष
1	अब्दुल बिस्मिल्लाह	झीनी झीनी बीनी चदरिया	राजकमल प्रकाशन, 1.बी. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली	नौवा संस्करण-2018
2	असगर वजाहत	सात आसमान	राजकमल प्रकाशन, 1.बी. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली	चौथा संस्करण-2015
3	मेहरुन्निसा परवेज	कोरजा	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	आवृति संस्करण-2011
4	नासिरा शर्मा	जिन्दा मुहावरे	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	आवृति संस्करण-2017
5	राही मासूम रजा	आधा गाँव	राजकमल प्रकाशन, 1.बी. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली	इक्कीसवाँ संस्करण-2019
6	गुलशेर खां शानी	कालाजल	राजकमल प्रकाशन, 1.बी. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली	आठवाँ संस्करण-2011
7	अब्बास मेलिनमनी	जन्नत मोहल्ला	लोहिया प्रकाशन, किक्षीतीज क्व्युगल्लू रस्ते, गाँधी नगर, बल्लारी	प्रथम संस्करण – 2008
8	बोलवारु महमद कुई	जिहाद	नवकर्नाटक पब्लिकेशन प्रा.लि. एजेंसी सेंटर, बैंगलूरू	दूसरा संस्करण-2011

9	मुमताज बेगम	बंदलिके	नवकर्नाटक पब्लिकेशन प्रा.लि. एजेंसी सेंटर, बैंगलूरू	दूसरा संस्करण-2010
10	फ़कीर महमद कट्टपाड़ी	सरकुगलु	तेझस पब्लिसर, हील ग्रो फार्म हाउस मिलटरी कालोनी, उडपी जिले	दूसरा संस्करण-2012
11	मुहमद कुलाई	कांडकल्लमले	इरुवे प्रकाशन, पांडेशवरा, मंगलूरू	प्रथम संस्करण-2016
12	सारा अबूबकर	चंद्रगिरी तीरदल्ली	चंद्रगिरी प्रकाशन, निलय रस्ते, मंगलूरू	बारहवाँ संस्करण-2017

सहायक ग्रन्थ (हिंदी) :

क्र.सं.	लेखक का नाम	रचना का नाम	प्रकाशक	वर्ष
1	बाबा साहेब रसूल शेख	मुस्लिम समाज जीवन और अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास	विकास प्रकाशन, 311 सी-विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर	प्रथम संस्करण – 2011
2	गौरव तिवारी	मुस्लिम उपन्यासकार : परिवेश और उपन्यास	वांग्मय बुक्स, 205-ओहद रेजिडेंसी दोदपु रोड अलीगढ़	2016
3	सं. डॉ. एम फिरोज खान डॉ. ए. के पाण्डेय	कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह मूल्यांकन के विविध आयाम	अनुसंधान पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर, चमनगंज, थाना रोड, कानपुर	2017
4	सं. एम फिरोज अहमद	नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन	समसामयिक बुक, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली	2017
5	एम फिरोज खां	मुस्लिम विमर्श : साहित्य के आईने में	वांग्मय बुक्स, 205-ओहद रेजिडेंसी दोदपु रोड अलीगढ़	2012
6	शेख शरफोद्दीन फक्रोद्दीन	अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य में संघर्षरत आम आदमी	वान्या पब्लिकेशन, आवास विकास हंसपुरम, कानपुर	2017

7	सं. शगुफ्ता नियाज	नासिरा शर्मा का साहित्य साझी विरासत की गूंज	विकास प्रकाशन, 311 सी-विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर	2019
8	शेख मोहम्मद शाकीर शेख बशीर	नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में समसामयिक बोध	अन्नपूर्णा प्रकाशन, साकेत नगर, कानपुर	2011
9	तसनीन पटेल	समय के साक्षी प्रमुख मुस्लिम उपन्यासकार	आशीष प्रकाशन, मानसरोवर कांप्लेक्स, पी रोड, कानपुर	2011
10	सं. एम फिरोज खां	राही मासूम रजा और बदी उज्जमा मूल्यांकन के विविध आयाम	अनुसंधान पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर, चमनगंज, थाना रोड, कानपुर	2015
11	टी. जे रेखाराणी	मुस्लिम शासक और हिंदी उपन्यास	मिलिंद प्रकाशन, कंधास्वामी बाग, हनुमान व्यायामशाला की गली सुल्तान बाजार, हैदराबाद	2014
12	सं. एम फिरोज खां	हिंदी के मुस्लिम कथाकार : शानी	वांग्मय बुक्स, 205-ओहद रेजिडेंसी दोदपु रोड अलीगढ़	2012
13	अशोक तुकाराम जाधव	प्रेमचंद के उपन्यासों में हिंदू-मुस्लिम एकता	विकास प्रकाशन, 311 सी-विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर	2014
14	सुनील यादव	भारतीय मुसलमान मिथक इतिहास और यथार्थ	अनन्य प्रकाशन, पंचशील गार्डन नवीन, शाहदरा, दिल्ली	2019
15	शाहीन एजाज जमादार	हिंदी उपन्यासों में मुस्लिम आर्थिक जीवन	ए.बी.एस. पब्लिकेशन, आशापुर, सारनाथ, वाराणसी	2014
16	सं. नामवर सिंह	आधुनिक हिंदी उपन्यास	राजकमल प्रकाशन, 1.बी. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली	2014
17	सं. हनुमान	तुलनात्मक साहित्य	राजकमल प्रकाशन, 1.बी.	2014

	शुक्ल	सैद्धांतिक परिपेक्ष्य	नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली	
18	रामछबीला त्रिपाठी	हिंदी और भारतीय भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	2017
19	तरसेन गुजराल	दस कालजयी उपन्यास जमीन की तलाश	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	2018
20	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	हिंदी साहित्य का इतिहास	प्रकाशन संस्थान, दयानंद मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली	2009
21	ले. पारुकांत देसाई	हिंदी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास	चिंतन प्रकाशन, आवास विकास, हंसपुरम, कानपुर	2002
22	मोहन अवस्थी	हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	2001
23	नरेंद्र कोहली	हिंदी उपन्यास सृजन और सिद्धांत	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	2002
24	टी. मोहन सिंह	हिंदी साहित्य के विविध संदर्भ	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	1999

सहायक ग्रन्थ (कन्नड़) :

1	मुमताज अली खां	समाजोत्सव	सपना बुक हाउस, 3वां मुख्य रस्ते गांधीनगर, बेंगलुरु	2008
2	हरिकृष्णा भारप्पा	होस गन्नडा साहित्य उगम मत्तु विकास	सपना बुक हाउस, 3वां मुख्य रस्ते गांधीनगर, बेंगलुरु	2016
3	रहमत तेरेकेरी	लाके विरोदिगल जतेयलिल्ल हदनैदु मासुगलु	अभिनव मुदलनए मुख्य रस्ते मारेनहल्ली, विजयनगर, बेंगलुरु	दूसरा संस्करण 2011
4	रहमत तेरेकेरी	न्याय निष्ठूरिगल	अभिनव मुदलनए मुख्य रस्ते	दूसरा संस्करण

		जतेयलिल्ल हदनैदु मासुगलु	मारेनहल्ली, विजयनगर, बेंगलुरु	2011
5	असगर अली इंजीनियर, अनु. कन्नड़ हसन नयिम सुरकोड़	इस्लाम मत्तु महिले	नवकर्नाटक पब्लिकेशन प्रा.लि. एजेंसी सेंटर, बैंगलूरू	दूसरा संस्करण-2017
6	असगर अली इंजीनियर, अनु. कन्नड़ हसन नयिम सुरकोड़	इस्लाम केलवु तप्पु ग्रहिकेगलु	नवकर्नाटक पब्लिकेशन प्रा.लि. एजेंसी सेंटर, बैंगलूरू	दूसरा संस्करण-2012
7	असगर अली इंजीनियर, अनु. कन्नड़ हसन नयिम सुरकोड़	इस्लाम जगत्तु मत्तु मुस्लिमर समस्ऐग्लु	लोहिया प्रकाशन, किक्षीतीज क्व्युगल्लू रस्ते, गाँधी नगर, बल्लारी	2012
8	सरोजा संति	स्त्रीवादी चिंतकियर प्रवेशिके	गीतांजलि पुस्तक प्रकाशन,कन्दाय भवन,नुरडी रस्ते, राजेंद्र नगर शिवमोग्गा	2018
9	सं के. केशवशर्मा	कन्नड़ कादंबरी शास्त्र	गीतांजलि पुस्तक प्रकाशन,कन्दाय भवन,नुरडी रस्ते, राजेंद्र नगर शिवमोग्गा	2016
10	इब्राहीम सइद	महिले मत्तु समाज	शांति प्रकाशन, हिदायत सेंटर,बिबी अलाबि रस्ते मंगलुरू-1	6वाँ संस्करण 2019
11	सय्यद अबुल अला मौदूदि	खुतबन (इस्लामीन बुनादिगलु)	शांति प्रकाशन, हिदायत सेंटर,बिबी अलाबि रस्ते मंगलुरू-1	2017
12	इमाम यह्या बीन शरिफोद्दीन नववि	40 हदिसगलु	शांति प्रकाशन, हिदायत सेंटर,बिबी अलाबि रस्ते मंगलुरू-1	2018
13	अब्दुल मोरनी, पाटना	भयोत्पदेन मत्तु इस्लाम	शांति प्रकाशन, हिदायत सेंटर,बिबी अलाबि रस्ते मंगलुरू-1	दूसरा संस्करण 2015

14	फौजिया सुल्ताना	मुस्लिमर हब्बगलु	शांति प्रकाशन, हिदायत सेंटर,बिबी अलाबि रस्ते मंगलुरू-1	2015
15	सैय्यद अबुल अला मौदूदि, अनु. इब्राहीम सइद	जिहाद	शांति प्रकाशन, हिदायत सेंटर,बिबी अलाबि रस्ते मंगलुरू-1	दूसरा संस्करण 2003
16	शेख अहमद कारकुल	तलाक	शांति प्रकाशन, हिदायत सेंटर,बिबी अलाबि रस्ते मंगलुरू-1	2018
17	ले. मुंशी प्रेमचंद, अनु. महमद अशरक	इस्लामी संस्कृति	शांति प्रकाशन, हिदायत सेंटर,बिबी अलाबि रस्ते मंगलुरू-1	2013
18	मौलाना सैय्यद अहमद उरुईन कद्री	सुख दांपत्या	शांति प्रकाशन, हिदायत सेंटर,बिबी अलाबि रस्ते मंगलुरू-1	2014
19	ले. फ़कीर मुहम्मद कटपाड़ी, सरकुग्लु (कन्नड़ कादंबरी),अनु. मीरा शिराली	माल	यशोधन (येशू) पाटिल शब्द पब्लिकेशन, जनकल्याण वसिरा नाका बोरीवली (प.)	2017
20	रहमत इरिकेरे	प्रति संस्कृति	अभिनव मुदलनए मुख्य रस्ते मारेनहल्ली, विजयनगर, बेंगलुरु	5वाँ संस्करण 2012
21	प्रो.हु.का.जयदेव	अरुणोदय नवोदय नंतर	कर्नाटक सरकार कन्नड़ पुस्तक प्रतिकार, चामराज पेटे, बेंगलुरु	1999
22	कीर्तिनाथ कुर्तकोटी	विमर्शय विनय कादंबरी	मनोहर ग्रंथमाला, धारवाड़, लक्ष्मी भवन, सुभाष रस्ते, धारवाड़	1997
23	डॉ. शिवलिंगप्पा वाई. बंडारी	कन्नड़ कादंबरी गल्ल्ली स्त्री (स्वतंत्र	शरण स्फुती, एस. बी. प्रतिष्टान, शिदुनमडू ता. सेंड	2010

पूर्व काल)   गुलबर्गा